भूगोल B.A. III Year

प्र० – संभववाद की व्याख्या कीजिए।

सम्भववाद

पर्यावरणवाद या नियतिवाद के चलते भूगोलवेताओं ने यह अनुभव किया किया कि मानव क्षमता एवं महत्ता नकारा जा रहा है।

इसी प्रकार के विचारों के प्रादुर्भाव होने से मानव पर्यावरण सम्बन्धों को लेकर भूगोल में जो विचारधारा विकसित हुई उसे 'सम्भववाद' के नाम से जाना जाता है।

सम्भववाद को परिभाषित करते हुए 'हेगेट' ने लिखा फ्रांसीसी विद्वान फेब्वरे ने यद्यपि इसे वास्तविक स्वरूप फ्रांस के ही प्रसिद्ध भूगोलवेता वाइडल डी ला ब्लांश ने दिया

फेब्वरे जो मूलत इतिहासकार थे उन्होंने अपनी पुस्तक में मानव पर्यावरण सम्बन्धों के नवीन रूप में प्रस्तुत किया

सम्भववादी विचारधारा के जनक फ्रांस के भूगोलवेता वाइडल डी ला ब्लांश को माना जाता है।

जिन्होंने अपनी पुस्तक में न केवल मानव पर्यावरण सम्बन्धों हेतु सम्भववाद का विचार दिया अपितु अनेक भूगोलवेत्ताओं की इस दिशा में विचार करने का मार्ग भी प्रशस्त किया –

वीमन के अनुसार – भौगोलिक अध्ययन में सम्भववाद की जड़ें अत्यधिक गहराई तक है उनके अनुसार जैसे जैसे ज्ञान और विज्ञान का विकास और विस्तार होता जाता है।

कालसावर – ने भी मानव की क्षमता का प्रतिपादन करते हुए सम्भववादी विचारधारा के

विकास मे योग दिया

ब्लाश के शिष्य जीन ब्रुन्स ने सम्भववाद की विचारधारा को आगे बढ़ाया तथा अपनी पुस्तक Human Geography मे इसकी विशद व्याख्या की

उपर्युक्त विद्वानो के अतिरिक्त डिमान्जिया ब्लेचार्ड हन्टर किरचॉफ आदि ने भी मानव को सर्वोपरि स्वीकार करते हुए सम्भववाद की विचार धारा की पुष्टि किया

(2) प्र० → प्रदूषण को परिभाषित कीजिए। प्रदूषको के कौन कौन से प्रकार है। वर्णन किजिए?

(A) प्रदूषण का अर्थ एवं परिभाषा

पर्यावरण जैव व अजैव संघटको से निर्मित है। जिसमे सभी संघटक संतुलित दशा मे रहते है। जब यह पर्यावरण अवनयन इतना अधिक हो जाता है। कि पौधों जीव जन्तुओ और मानव पर प्राणघातक तथा जानलेवा कुप्रभाव पड़ने लगता है।

परिभाषाएँ :-

डा० जगदीश सिंह (1991)

पर्यावरण के किसी भी तत्व के भौतिक रासायनिक अथवा जैविक विशेषताओ मे कोई ऐसा परिवर्तन जो मानव या अन्य प्राणियों के लिए हानिकारक प्रभाव पर्यावरण प्रदुषण कहलाता है।

डा० सविन्द्र सिंह (1991)

पर्यावरण प्रदूषण उसे कहते हैं जो मनुष्य के इच्छित या अनिच्छित कार्यों द्वारा प्राकृतिक पारिस्थितिक तन्त्र मे इतना अधिक परिवर्तन हो जाता है

आर० आई० दासमैन (1978)

पर्यावरण प्रदूषण उस दशा को कहते हैं जब मानव द्वारा पर्यावरण मे विभिन तत्वो एंव ऊर्जा का इतनी अधिक मात्रा मे संग्रह हो जाता हैं

लार्ड केनेट —

पर्यावरण मे उन तत्वो या ऊर्जा की उपस्थिति को प्रदूषण कहते हैं जो अचानक बच निकले हो या जिनका मानव के स्वास्थ्य पर अवांछनीय दुष्प्रभाव पड़ता हैं

प्राचार्य
मीरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
पाण्डेयपुर, ताखा, बलिया